Chaitanya Mahaprabhu ka Jeevan Vratant evam Unake Sahkari Bhakton Ka Chatanya Sampraday mein Yogdan –

1. **Dhiraj kumar (Reserch Scholar) History Deptt. Agra College.**
2. **Dr. Yashodanand Tripathi (Reader & Head of The Deptt.) History Deptt. Agra College Agra.**

सारांशः– चैतन्य सम्प्रदाय के आचार्यगण सुप्रसिद्ध धर्माचार्य प्रकाण्ड विद्वान, समाज सुधारक, कुशल राजनीतिज्ञ होने के साथ–साथ साहित्य, संगीत और कलाओं के मर्मज्ञ एवं प्रोत्साहनकर्ता थे । उन्होंने अपने कवियों, संगीताचार्यों, गायकों, वादकों, चित्रकारों, पाकशास्त्रियों तथा अन्य कलाकारों को संगठित कर उनकी कलाओं को धार्मिक कार्यों में लगा दिया था। इस प्रकार इन आचार्यों ने मानव जीवन की समस्त सत्य, शिव और सुन्दर भावनाओं को भगवान के समक्ष अर्पित कर उनके सदुपयोगों का मार्ग प्रशस्त किया । इन आचार्यों का सामाजिक दृष्टिकोण प्रगतिशील एवं समन्वय वादी था। यही कारण है कि इनके शिष्यों में बड़े–बड़े राजा महाराजाओं से लेकर भिक्षुक तक, प्रकाण्ड विद्वान से लेकर मूर्ख तक और उच्च जातियों से लेकर शूद्र म्लेच्छ तक थे। सबको उन्होने भागवत सेवा का अधिकार दिया।

प्रसंग :– प्रस्तुत लेख चैतन्य महाप्रभु के भक्ति वैराग्य से सम्बन्धित है। चैतन्य महाप्रभु के प्रभावशाली व्यक्तित्व का समाज पर विशेष प्रभाव पड़ा लेख में सामान्य से लेकर विद्वत जनों पर भक्ति मार्ग के प्रभाव का वर्णन है। मूर्धन्य विद्वानों ने भी अभिमान त्याग राधाकृष्ण भक्ति मार्ग को अपना लिया। और सर्वस्व त्याग दिया साथ ही समाज में समन्वय स्थापित करने का भरसक प्रयास किया। चैतन्य सम्प्रदाय से सम्वन्धित साहित्य की रचना कर मानव कल्याण का मार्ग प्रशस्त किया । प्रस्तुत लेख में चैतन्य महाप्रभु के सहकारी भक्तों की चैतन्य महाप्रभु में निष्ठा एवं समाज के साथ किये उपकार का वर्णन है। लेख में मौलिकता तथा समृद्धि साहित्यक शब्दावली का प्रयोग किया गया है।

संदर्भ :– प्रस्तुत लेख में चैतन्य सम्प्रदाय के सहकारी भक्तों का सामाजिक, प्रगतिशील, समन्वय वादी, जनकल्याण कारी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया गया है। चैतन्य सम्प्रदाय के आचार्यगण सुप्रसिद्ध धर्माचार्य, प्रकाण्ड विद्वान समाज सुधारक, कुशल राजनीतिज्ञ होने के साथ–साथ साहित्य, संगीत और कलाओं के मर्मज्ञ एवं प्रोत्साहन कर्ता थे। चैतन्य द्वारा आदेशित कवि ,संगीताचार्य, गायक, वादक, चित्रकारों, पाकशास्त्रियों की कार्य प्रगति का वर्णन है। विभन्न सहकारी भक्तों द्वारा विभिन्न मतों से साहित्य की रचना कर चैतन्य सम्प्रदाय को प्रदान किये गये सहयोग का वर्णन है। शोधार्थी ने सहकारी भक्तों के विचारों का वर्णन किया है । साथ ही लेख की मौलिकता का पूर्ण ध्यान रखा गया है ।

विश्वंभर से चैतन्य महाप्रभु तक :–चैतन्य महाप्रभु का जन्म नवद्वीप (नदिया – बंगाल) के ब्राहमण परिवार में संम्बत् 1542 की फाल्गुन पूर्णिमा को हुआ था । पिता का नाम श्री जगन्नाथ मिश्र और माता का नाम शची देवी था। इनका बचपन का नाम विश्वंभर किन्तु माता पिता उनको निमाई कहते थे। वे गौरंग नाम से भी जाने जाते थे सन्यासी होने पर उनका नाम चैतन्य कृष्ण पड़ा जो बाद में चैतन्य महाप्रभु के नाम से विख्यात हुए। 9 वर्ष की आयु में उनका उपनयन संस्कार हुआ सं0 1553 में उनके पिता के देहान्त हो गया। सं0 1556 में 14 वर्ष की आयु में उन्होंने 'कलाप व्याकरण 'की टीका लिखी।[2] नवद्वीप न्यायशास्त्र का केन्द्र था उन्होंने भी नवद्वीप में एक पाठशाला स्थापित की इसी वर्ष उनका विवाह लक्ष्मीप्रिया नामक कन्या से हुआ किन्तु 1559 में उनका देहावसान हो गया। सं0 1562 में उनका दूसरा विवाह विष्णुप्रिया नामक गुणवती स्त्री से हो गया। इस समय गौरंग की आयु 20 वर्ष हो चुकी थी बड़े–बड़े विद्वान दिग्गज उनके पांडित्य का लोहा मानते थे उन्हें भी अपने विद्या वैभव पर गर्व था।[2] 1562 में वे अपने पिता के श्राद्ध व पिंडदान के लिए गया धाम गये वहां पर श्री चैतन्य देव को माधवेन्द्र पुरी के शिष्य ईश्वरपुरी से मिलने का सुयोग अवसर मिला। आध्यात्मिक एवं भगवद्भक्ति से प्रभावित चैतन्य ईश्वर पुरी के शिष्य बन गये। ईश्वर पुरी के उपदेश और सत्संग से उनके चरित्र में महान परिवर्तन हो गया ।[3] ईश्वर पुरी से दीक्षा लेने के चार वर्ष तक नाममात्र ग्रहस्थ यथार्थ में वे संसार से विरक्त और कृष्ण की ओर अनुरक्त हो चुके थे।[4] सं0 1556 में माघशुक्ल पक्ष में केशव भारती से संन्यास की दीक्षा ली।[5] अब उनकी उम्र 24 वर्ष हो चुकी थी। उनका संन्यास आश्रम का नाम कृष्ण चैतन्य रखा गया । कृष्ण का गुणगान और कृष्ण की आराधना उनका नित्य कर्म बन गया । चैतन्य नित्यानंद गोस्वामी , जनक नंद पंडित, दामोदर पंडित और मुकुन्द दत्त नामक चार भक्तजनों के साथ नीलांचल की ओर चले गये।[6] अपने देश भ्रमण में चैतन्य गोदावरी नदी के निकट पहुँचे। वहां विद्वान भक्त रामानन्द उनसे आकर मिले। चैतन्य के साथ आध्यात्म चर्चा करने के बाद चैतन्य श्री रंगक्षेत्र पहुँचे वहां वैंकट भट्ट के साथ चातुर्मास किया और भट्ट के 12वर्षीय पुत्र को चैतन्य ने सं0 1568 की कार्तिक शुदी एकादशी को अपना अनुगत किया जो बाद में गोपाल भट्ट के नाम से प्रतिष्ठित हुए गोपाल भट्ट ने वृंदावन में ठाकुर राधारमण जी को प्रतिष्ठित किया। चैतन्य जी ने देश भ्रमण तथा अन्य धार्मिक यात्राएं की। जगन्नाथ पुरी में प्रवास के दौरान अनेक भक्तजन चैतन्य के सत्संग का लाभ उठाने दूर–दूर से आया करते थे।[7] अपने जीवन के अंतिम 12 वर्षों में चैतन्य संज्ञाहीन और बाहय ज्ञान से शून्य होकर श्रीकृष्ण के विरह में विव्हल रहा करते थे। उनके अनुसार भक्तजन जयदेव विद्यापति और चण्डीदास कृत राधाकृष्ण की प्रेमलीलाओं का गायन कर उन्हें सांत्वना देते रहते थे।[8] एक दिन दिव्योन्माद की दशा में दौड़कर वे समुद्र में घुस गये इस प्रकार सं0 1590 में अपनी 48 वर्ष की आयु में उनका देहावसान हो गया। [9]

चैतन्य महाप्रभु के अनुगामी :– चैतन्य महाप्रभु के अनुगामियों को दो श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है–

पहली श्रेणी उन कतिपय प्रतिभाशाली महापुरूषों की थी जिन्होंने चैतन्य महाप्रभु के उद्देश्य की महता अनुभव कर पूरी लगन के साथ सक्रिय सहयोग दिया। उन्हें सहकारी कहा जाता है। चैतन्य के सहकारियों में नित्यानन्द और अद्वैत प्रमुख थे।[10] चैतन्य सम्प्रदाय में चैतन्य महाप्रभु के साथ उनको भी अवतार माना जाता है इस सम्प्रदाय में चैतन्य महाप्रभु कहलाते हैं। तो नित्यानंद और अद्वैत प्रभु की उपाधि से विभूषित हैं।[11] उन दोनों के अतिरिक्त हरिदास, श्रीवास पंडित और नरहरि सरकार चैतन्य के प्रमुख सहकारी थे।

चैतन्य महाप्रभु के अनुगामियो की दूसरी श्रेणी बहुसंख्यक श्रद्धालुओं की थी जो चैतन्य से आकर्षित होकर अनुगत हुए थे जिन्हें चैतन्य सम्प्रदाय में 'पार्षद' कहा जाता है। चैतन्य महाप्रभु के पार्षदों में गदाधर पंडित , रामानंद और स्वरूप दामोदर प्रमुख थे।

श्री चैतन्य महाप्रभु के भक्तों में लोकनाथ , भूगर्भ, मधु, सनातन, रूप, रघुनाथदास, गोपाल भट्ट और जीव गोस्वामी थे।[12] कहा जाता है कि उन्होंने अपने ज्ञान और कवित्व से चैतन्य सम्प्रदाय की महत्वपूर्ण सेवा की उनमें प्रकाशानंद संरस्वती, वृंदावन दास, कृष्णदास कविराज और कवि कर्ण –पूर्ण प्रमुख हैं।[13] श्री चैतन्य महाप्रभु के पश्चात इनके अनुगामियों में विश्वनाथ चक्रवर्ती और बल्देव विद्याभूषण विशेष उल्लेखनीय रहे।

चैतन्य महाप्रभु के प्रमुख सहकारी भक्तों का संक्षिप्त परिचय :–

1– श्री नित्यानंद प्रभु :– नित्यानंद प्रभु का जन्म सं0 1530 की शुक्ल 13 को वीरभूमि जिला के एकाचका ग्राम में हुआ था यह चैतन्य महाप्रभु से 12 वर्ष बड़े थे इनके पिता का नाम हाड़ाई पंडित तथा माता का नाम पद्मावती था।[14] डा0 भण्डारकर एवं परशुराम चतुर्वेदी ने नित्यानंद को चैतन्य महाप्रभु के बड़े भाई होने का समर्थन किया किन्तु यह बात प्रमाणिक नहीं मालूम नहीं होती । नित्यानंद सं0 1542 में 12 वर्ष की आयु में विरक्त होकर घर से चले गये इन्होंने अनेक पर्यटन स्थलों एवं तीर्थों की यात्रा की।[15] इन्होंने घूमते हुए माधयहन्द्र पुरी नामक माधव सन्यासी से दीक्षा प्राप्त की।[16] इनका विवाह सूर्यदास पंडित की दो कन्याओं वसुधा देवी व जान्हवी से हुआ । वसुधा देवी के गर्भ से गंगादेवी कन्या तथा वीरचंद्र नामक पुत्र उत्पन्न हुए।[17] बाद में नवद्वीप पहुँचकर चैतन्य महाप्रभु के सहकारी बन गये। चैतन्य महाप्रभु के तिरोधान होने पर उन्होंने बंगीय वैष्णवों का संगठन बनाये रखा।[18] नित्यानंद प्रभु का देहावसान सं0 1599 में हुआ।[19] इनके उपरान्त इनकी पत्नी जान्हवी और उनके पुत्र वीरचंद्र ने वंगीय वैष्णवों का नेतृत्व किया।

2–श्री अद्वैत प्रभु :– अद्वैत प्रभु का जन्म नदिया जिले के शांतिपुर गांव में सं0 1490 की माघ शुक्ल 7 को हुआ था। यह आयु में चैतन्य महाप्रभु से 52 वर्ष बडे थे।[20] इन्होंने माधव सम्प्रदायी विद्वान सन्यासी माधवेन्द्र पुरी से वैष्णव धर्म की दीक्षा प्राप्त की थी।[21] शांतिपुर में धर्माचार्य रह वैष्णव धर्म का प्रचार किया इन्होंने चैतन्य महाप्रभु की माता शची देवी को दीक्षा दी थी।[22] बाद में नवद्वीप आकर चैतन्य प्रभु के सहकारी बन गये और वैष्णव धर्म का प्रचार किया।[23] इनकी दो पत्नियां श्री देवी और सीता देवी थी। अद्वैत प्रभु के पुत्र अच्युतानन्द का जन्म सं0 1549 में हुआ था वे भी बचपन में विरक्त होकर चैतन्य प्रभु के साथ रहते थे। अद्वैताचार्य के कारण शांतिपुर भी गौड़ीय भक्तों का तीर्थ स्थान बन गया।[24]

3– श्री हरिदासः– इनका जन्म सं0 1506 के अगहन मास में जसोर जिले के बुरहान पुर ग्राम में हुआ था यह चैतन्य महाप्रभु से 36 वर्ष बड़े थे यह मुसलमान माता पिता के पुत्र थे कुछ लोग इन्हें अनाथ हिन्दू बालक मानते थे। बचपन से ही यह हरि भक्ति और हरिनाम की ओर आकर्षित हो गये।[25] यह अद्वैत प्रभु के साथ चैतन्य प्रभु की मण्डली में सम्मलित हुए थे।[26] चैतन्य महाप्रभु इन्हें अपने साथ नीलांचल ले गये यहीं इनका देहान्त सं0 1581 में हो गया। चैतन्य महाप्रभु ने स्वयं इनका समाधि स्थल बनबाया एवं अन्तिम संस्कार किया था।[27]

4– श्री वास पंडित :– श्रीवास पंडित जलधर पंडित के पांच पुत्रों में एक थे । श्रीवास वैदिक ब्राहमण थे । चैतन्य महाप्रभु से प्रभावित हुए। चैतन्य महाप्रभु के भक्ति प्रचार में श्रीवास प्रारंभिक सहायक थे।[28] जब चैतन्य महाप्रभु नवद्वीप में रहे यह इनके अंतरंग और सहायक रहे उनको चैतन्य सम्प्रदाय में नारद का अवतार माना जाता था।[29]

5– श्री नरिहरि सरकार :– इनका जन्म बर्द्धमान जिले के श्रीखण्ड नामक स्थान में सं0 1535 में हुआ था इनके पिता का नाम श्री नारायण था। नरहरि आजन्म अविवाहित रहकर नैष्ठिक ब्रहमचारी रहे।[30] इनके भाई मुकुन्द और भतीजा रघुनन्दन चैतन्य महाप्रभु के शिष्य बन गये इनके कारण नवद्वीप की तरह श्रीखंड श्री वैष्णव धर्म का केन्द्र बन गया। नरहरिदास के शिष्य लोचनदास थे। चैतन्य के अधिकांश भक्त इनके राधा–भाव के उपासक थे किन्तु नरहरि की आस्था चैतन्य के रसराज कृष्ण भाव के प्रति थी।[31]

6– श्री गदाधर पंडित :– इनका जन्म सं0 1544 में हुआ था यह विद्वान व भागवत के धार्मिक व्याख्याता थे यह सं0 1555 में ही नवद्वी में आ गये। इस प्रकार गदाधर पंडित आरम्भ से ही चैतन्य महाप्रभु के सम्पर्क में रहे।[32] श्री गदाधर पंडित चैतन्य के साथ नीलांचल में रहकर चैतन्य को भागवत सुनाते रहे इनका देहावसान चैतन्य के तिरोधान के प्रायः एक वर्ष पश्चात् 1591 में हुआ था।[33]

7– श्री स्वरूप दामोदर :– श्री स्वरूप दामोदर चैतन्य के साथियों एवं सेवकों में विशेष स्थान रखते हैं। नवद्वीप से नीलांचल तक चैतन्य के साथ रहकर अनुचर के रूप में उनकी सेवा करते थे। उनका आरम्भिक नाम पुरूषोत्तम आचार्य था सन्यास लेने के अनंतर यह स्वरूप दामोदर जी के नाम से प्रसिद्ध हुए।[34] नीलांचल में चैतन्य महाप्रभु के व्यक्तिगत सेवक, सचिव और सहायक सब कुछ स्वरूप दामोदर ही थे।[35] श्री स्वरूप दामोदरजी द्वारा रचित 'कड़चा' को रघुनाथ गोस्वामी ने कंठस्थ किया था उनसे कृष्णदास कविराज ने सुनकर इनका चैतन्य चरितामृत में उल्लेख किया है।[36] इनका देहावसार भी चैतन्य के तिरोधान के बाद उसी वर्ष सं0 1590 में ही हुआ था।

8–श्री राय रामानन्द :– श्री रायरामानन्द उड़ीसा प्रदेशान्तर्गत जगन्नाथ पुरी के निकटवर्ती ग्राम में पैदा हुए थे। स्वाधीन नरेश गजपति रूद्रप्रताप ने उनको अपने अधीन गोदावरी तटवर्ती विद्यानगर का शासक नियुक्त किया वे उच्च राजकीय पदाधिकारी होने के साथ–साथ विद्वान, सुकवि, परमभक्त और कृष्ण तत्व के महान ज्ञाता थे।[37] चैतन्य महाप्रभु की दक्षिण यात्रा के दौरान सं0 1567 में गोदावरी के तट पर रायरामानन्द जी से भेंट हुई। चैतन्य देव तथा राय रामानन्द जी के बीच धार्मिक वाद –विवाद के अन्त में रायरामानन्द ने चैतन्य महाप्रभु से कहा ''आप सर्वज्ञ हैं मैं तो नितान्त अज्ञ हूँ । आपने मेरी जिव्हवा से जो कहलवाना चाहा मैने वहीं कहा है।'' इस सत्संग में जो तत्व मंथन हुआ उसका विस्तार पूर्वक वर्णन 'चैतन्य चरितामृत' में हुआ है।[38] इसके बाद रायरामानन्द अपना उच्च राजकीय पद छोड़कर चैतन्य महाप्रभु के पास नीलांचल में आ गये।[39] उन्होने संस्कृत में ' जगन्नाथ बल्लभ' नाटक की रचना की जो ' रामानन्द –संगीत–नाटक' के नाम से प्रसिद्ध है। लोचनदास ने बंग भाषा में पद्यबद्ध अनुवाद किया है।[40] राय रामानन्द का देहान्त चैतन्य महाप्रभु के अनंतर सं0 1591 में हुआ था।[41]

9– श्री लोकनाथ चक्रवर्ती :– श्री लोकनाथ चक्रवर्ती यशोहर तालगौड़ के निवासी श्री पद्मनाभ चक्रवर्ती के पुत्र थे इनका जन्म सं0 1542 में हुआ था माता का नाम सीता देवी था। इन्होंने अद्वैताचार्य से दीक्षा ली थी।[42] श्री लोकनाथ चक्रवर्ती चैतन्य महाप्रभु के समवयस्क और सहपाठी थे। चैतन्य महाप्रभु ने श्री लोकनाथ चक्रवर्ती को वृंदावन भेजा और आदेश दिया कि वे वहां के तीर्थों और लीला स्थलों का अनुसंधान करें।[43] लोकनाथ अपने साथी भूगर्भ के साथ सं0 1566 में वृंदावन आये कुछ समय तक भटकने के बाद वे वापस नवद्वीप गये किन्तु तब तक चैतन्य सन्यासी होकर दक्षिण चले गये लोकनाथ चक्रवर्ती भी चैतन्य के पास नीलांचल पहुँचे। जब रूपगोस्वामी और सनातन गोस्वामी स्थायी रूप से वृंदावन रहने लगे तब वह भी वृंदावन आ गये।[44] लोकनाथ चक्रवर्ती परम विरक्त और भावुक भक्त थे। नरोत्तम ठाकुर ने चक्रवर्ती से मिलकर दीक्षा प्राप्त करनी चाही किन्तु राजपुत्र होने के कारण वे नरोत्तम ठाकुर को दीक्षित नहीं करना चाहते थे। नरोत्तम जी की सेवा से प्रभावित एवं अत्यंत चेष्टा करने के बाद नरोत्तम जी इनसे मंत्र दीक्षा प्राप्त कर सके।[45]

10–श्री भूगर्भ गोस्वामी :–श्री भूगर्भ गोस्वामी लोकनाथ चक्रवर्ती के साथ सं0 1566 में नवद्वीप से प्रथम बार बृंदावन आये।[46] यह विरक्त वैष्णव थे । नाभाजी के 'भक्तमाल' में इनका उल्लेख उन भक्तों के साथ किया मिलता है जिन्होंने वृंदावन की रस–माधुरी का आस्वादन किया था।[47]

11– श्री मधुगोस्वामी :– श्री मधुगोस्वामी वृंदावन की रस–माधुरी का आस्वादन करने के लिए बंग प्रदेश से वृंदावन आकर रहने लगे अनेक वर्षों तक यह वृंदावन की कुंज लताओं में रमते रहे।[48]

12–श्री सार्वभौम भट्टाचार्य :– सार्वभौम भट्टाचार्य और प्रकाशानंद सरस्वती चैतन्य के समकालीन दार्शनिक विद्वान थे। सार्वभौम भट्टाचार्य न्यायशास्त्र , और प्रकाशानंद सरस्वती यहदांत के महान पंडित थे। सार्वभौम भट्टाचार्य बंग देश के निवासी थे । उत्कल के राजा श्री नरेश गजपति की प्रार्थना पर जगन्नाथ पुरी के निवासियों को दार्शनिक शिक्षा प्रदान करते थे।[49] चैतन्य महाप्रभु की सार्वभौम भट्टाचार्य से जगन्नाथ पुरी में भेंट हुई। सार्वभौम भट्टाचार्य को तर्क देकर बताया कि शंकराचार्य का भाष्य वेदान्त विरूद्ध है। इस प्रकर भट्टाचार्य चैतन्य महाप्रभु से प्रभावित होकर अवतारी पुरूष मानने लगे। और चैतन्य महाप्रभु के अनन्य भक्त बन गये।[50] सार्वभौम भट्टाचार्य के विपुल भक्ति साहित्य की रचना का विशेष महत्व है।[51]

13–प्रकाशानन्द सरस्वती :– ज्ञान की तुलना में भक्ति मार्ग को हेय समझने वाले प्रकाशानन्द शंकर वेदान्त के प्रकाण्ड पण्डित और काशी विद्वत समाज के शिरोमणि थे। काशी के एक धनी महाराष्ट्रीय सज्जन ने विद्वत परिषद का आयोजन किया । चैतन्य महाप्रभु को भी आमंत्रित किया गया था। प्रकाशानन्द सरस्वती ऊँचे आसन पर विराजमान हुए। उसी समय चैतन्य महाप्रभु अपने भक्तों सहित हरिनाम कीर्तन करते हुए विराजमान हुए।[52] संन्यासाश्रम की मर्यादानुसार प्रकाशानन्द ने आतिथ्य सत्कार कर उच्च आसन पर बैठने का आग्रह किया किन्तु चैतन्य ने विनय पूर्वक यह स्वीकार नहीं किया । चैतन्य प्रभु ने उस विद्वत समाज में हरिनाम कीर्तन श्लोक की अत्यंत विद्वता पूर्ण व्याख्या की और श्री कृष्ण भक्ति तथा हरिनाम कीर्तन को सर्वोपरि सिद्ध कर दिया।[53] इस अद्भुत व्याख्यान से प्रकाशानन्द जी का ज्ञान–गर्व दूर हो गया और उन्हें भक्ति तत्व का बोध हो गया और श्री कृष्ण की सरस माधुर्य भक्ति के रंग में रंग गये। चैतन्य महाप्रभु ने उनको अधिकारी जानकर वृंदावन वास करने का आदेश दिया। प्रकाशानंद बाद में प्रबोधानन्द के नाम से विख्यात हुए। प्रकाशानन्द का वृतान्त वृंदावन दास और कृष्णदास कविराज ने किया।[54]

14–मुरारी गुप्त :– इनका जन्म सिलहट में सं0 1527 में हुआ । यह ग्रहस्थ , सुकवि, विद्वान एवं भक्त थे नवद्वीप में चैतन्य के पड़ोसी थे। इन्होने 'श्रीकृष्ण चैतन्य चरितामृत' की रचना की। यह कृति 'कड़चा' (सूत्र रूप में लिखित घटनावली) नाम से प्रसिद्ध है। जिसमें चैतन्य महाप्रभु की आरम्भिक जीवन – घटनाओं को संस्कृत भाषा में कविताबद्ध किया गया है। इसकी रचना सं0 1570 में हुई थी।[55] लोचन दास ने इसके आधार पर एक ग्रन्थ की रचना की जो बंग भाषा में पंचाली काव्य के रूप में रचा गया है।[56]

15– श्री प्रबोधानन्द :– रस प्रसिद्ध कवि, अनन्य भक्त और वृंदावन के प्रति परम निष्ठावान महात्मा थे इनका प्रमाणिक– जीवन –वृतांत प्राप्त नहीं है। इनकी जीवनी के जो सूत्र हैं यह किंवदंती और अनुमान पर आधारित है ।[57] ये किस मत के अनुयायी थे यह पर्याप्त विवाद का विषय है। गौड़ीय मान्यता और साहित्य के अनुसार यह चैतन्य मत के अनुयायी थे। इनकी प्रसिद्ध रचना 'चैतन्य षड़ागत' से इस बात की पुष्टि होती है। कुछ विद्वानों ने रचनाओं में मत वैभिन्नता के आधार पर दो प्रबोधानंद बताऐ हैं जो शोधार्थी की दृष्टि में हास्यास्पद है। शोधार्थी के अनुसार चैतन्य चन्दामृत, संगीत माधव और 'वृंदावन महिमामृत शतक' के रचयिता एक ही प्रबोधानन्द थे। उक्त ग्रन्थों के अतिरिक्त 'आश्चर्य रास प्रबन्ध' 'काम गायत्री व्याख्या' और 'गीत गोविन्द टीका' उनकी रचनाएं हैं। प्रबोधानन्द जी कालियादह नामक स्थल पर निवास करते थे। वहीं उनका देहावसान हुआ तथा समाधि स्थल भी बना है।[58]

16– श्री कर्णपूर :– यह बंग प्रदेश नदिया जिलांर्गत काचरापाड़ा ग्राम के निवासी थे । इनका जन्म सं0 1581 में पिता का नाम श्री शिवानंद और भाइयों का नाम चैतन्यदास और रामदास थे । यह सब चैतन्य महाप्रभु के परम भक्त थे।[59] इनका वास्तविक नाम परमानंद दास अथवा पुरीदास था। इनका देहावसान सं0 1633 में माना जाता है। यह प्रमाणिक प्रतीत नहीं होता, एसी प्रसिद्ध है कि यह नरोत्तमदास ठाकुर द्वारा आमंत्रित होकर अपने भाइयों सहित खेतुरी उत्सव में सम्मलित हुए थे। अतः उनकी विद्यमानता सं0 1640 तक मानी जाती है । इनके प्रमुख ग्रन्थ इस प्रकार है–

16.1– चैतन्य चरितामृत– इसकी रचना सं0 1599 मे हुई थी।[60]

16.2– चैतन्य चन्द्रोदय नाटक– इसकी रचना सं0 1629 मे हुई थी। इसके 10 भागों में चैतन्य चरित का अभिनय के रूप में सुन्दर कथन हुआ है।[61]

16.2– गणोद्देश दीपिका– इसकी रचना सं0 1632 में हुई थी।[62]

16.3– आनंद वृंदावन चम्पू – यह श्रीकृष्ण लीला का सुप्रसिद्ध चम्पू कार्य है। इसमें 22 स्वस्तक हैं।[63] यह संस्कृत साहित्य है।

16.4– कृष्णाहिक कौमुदी – इसमें राधागोविन्द की अष्टकालीन दैनिक लीलाओं का कथन है।[64]

16.5– अलंकार कौस्तुभ– यह कृष्णलीला सम्बन्धी है इसमें 'किरण' नामक 10 अध्याय है। इसकी कई टीकाएं हुई हैं।[65]

उपरोक्त सहकारी भक्तों के अतिरिक्त श्री वृंदावन दास जी , श्री लोचनदास, श्री श्याम नंद, श्री गोविन्द दास, श्री नारायण भट्ट, श्री वीरचंद्र, श्री विश्वनाथ चक्रवर्ती, श्री बलदेव विद्याभूषण आदि भक्तों ने चैतन्य महाप्रभु के भक्ति कीर्तन तथा हरिकीर्तन में खुद को रंग लिया । चैतन्य सम्प्रदाय की परम्परा को आगे बड़ाते हुए अनेकों ग्रन्थ नाटक तथा काव्यों को लिपिबद्ध कर वैष्णव मत को प्रबल बनाने का कार्य किया ।

निष्कर्ष :– चैतन्य महाप्रभु का विरक्त होना मानव कल्याण में उत्कृष्ट कदम था । चैतन्य महाप्रभु के सहकारी भक्तों ने चैतन्य सम्प्रदाय की अनन्य सेवा कर भक्ति मार्ग को सुद्रड़ किया । चैतन्य महाप्रभु के शिष्य बड़े–बड़े राजा महाराजाओं से लेकर भिक्षुक, धुरंधर विद्वान से लेकर मूर्ख तक, उच्च जातियों से लेकर शूद्र अन्तयज एवं म्लेच्छ तक थे । चैतन्य महाप्रभु ने वर्ण व्यवस्था का ध्यान न रखकर सबको समन्वय वादी रंग में रंग दिया और राधा– कृष्ण की भक्ति में लगा दिया । चैतन्य महाप्रभु के शिष्यों ने मानव उत्थान हेतु प्रत्येक आदेश का सहर्ष पालन किया । अपने जीवन पर्यन्त चैतन्य समाजोत्थान में लगे रहे उनका प्रमुख मार्ग राधा कृष्ण भक्ति मार्ग था। और अंततः राधा–कृष्ण को हृदय में धारण कर तिरोधान प्राप्त किया। शायद यही भगवान राधाकृण का आदेश था । चैतन्य महाप्रभु के बाद उनके अनुगामियों ने चैतन्य सम्प्रदाय की परम्परा को आगे बड़ाने का कार्य किया। चैतन्य को चैतन्य महाप्रभु कहना उनके नाम की महत्ता को और बड़ा देता है। प्रस्तुत लेख में प्रमुख आचार्यों का वर्णन है । चैतन्य सम्प्रदाय से सम्बन्धित भक्ति साहित्य का विशुद्ध वर्णन है।

सदर्भ ग्रन्थ :–

1. *श्री श्यामदास –महाप्रभु श्री गौरंग, प्रष्ठ सं0 –9।*
2. *डा0 ऊषा गोयल – चैतन्य सम्प्रदाय संस्कृति और साहित्य, पृष्ठ सं0 – 18।*
3. *डा0 अवध विहारी लाल कपूर –ब्रज के भक्त, पृष्ठ सं0– 216।*
4. *लालदास – बंगला भक्तमाल, पृष्ठ सं0– 79।*
5. *श्री श्यामदास – महाप्रभु श्री गौरांग, पृष्ठ सं0 – 12।*
6. *डा0 बल्देव उपाध्याय –वैष्णव सम्प्रदायों का इतिहास, इतिहास और सिद्धान्त पृष्ठ सं0 –201।*
7. *बाबा वंशीदास – गौरांग भूषण विलास मंझावली पृष्ठ सं0– 60 ।*
8. *नरिहरि चक्रवर्ती– गौर चरित्र चिन्तामणि, पृष्ठ सं0 –131।*
9. *प्रभु दयाल मीतल – बृज के धर्म सम्प्रदायों का इतिहास, भाग–1 पृष्ठ– 283।*
10. *सुशील कुमार डे – अर्ली हिस्ट्री ऑफ दि वैष्णव फेथ एण्ड मूवमेण्ट इन बंगाल पृष्ठ सं0 – 87।*
11. *वही पृष्ठ सं0 – 90।*
12. *डा0 ऊषा गोयल – चैतन्य सम्प्रदाय : संस्कृति और साहित्य, पृष्ठ – 112।*
13. *ठाकुर भक्ति विनोद – श्री चैतन्य महाप्रभु ,पृष्ठ– 108 ।*
14. *बल्देव विद्याभूषण – नित्यानंद प्रभु वंश – परिचय भाष्य, पृष्ठ –02 ।*
15. *श्रीनाथ पंडित – चैतन्य मत मंजूसा , पृष्ठ –78 ।*
16. *श्री वृन्दावनदास ठाकुर– नित्यानंद प्रभुर वंश विस्तार पृष्ठ–9 ।*
17. *श्रामदास बाबाजी महाराज– नित्यानंद महिमा, पृष्ठ – 7 ।*
18. *टी.एन. कैनेडी – दि चैतन्य मूवमेण्ट पृष्ठ– 125 ।*
19. *बृजमोहन दास – नवद्वीप दर्पण पृष्ठ– 189 ।*
20. *डी.एन. सेन– चैतन्य एण्ड हिज कम्पैनियन्स, पृष्ठ– 213 ।*

21. सार्वभौम भट्टाचार्य – श्री अद्वैताष्टक पृष्ठ –4 ।
22. श्री रूप गोस्वामी – शची सुताष्टक पृष्ठ– 18 ।
23. प्रबोधानन्द सरस्वती – नवद्वीप शतक, पृष्ठ– 43।
24. ईशान नागर – अद्वैत प्रकाश, पृष्ठ –78।
25. एस. के. डे – अर्ली हिस्ट्री ऑफ दि वैष्णव फेथ एण्ड मूवमेण्ट इन बंगाल, पृष्ठ– 112।
26. डा0 अवध विहारी लाल कपूर – चैतन्य मत, पृष्ठ –105 ।
27. बही पृष्ठ – 107 ।
28. नरेश बंसल – चैतन्य सम्प्रदाय – सिंद्धान्त और साहित्य, पृष्ठ – 217।
29. लालदास – बंगाल भक्तमाल, पृष्ठ – 130।
30. पूर्णसिंह बैस ठाकुर – श्री गौंडेश्वर सम्प्रदाय का इतिहास, पृष्ठ –312 ।
31. विमन विहारी मजूमदार – चैतन्य चरिते रूपादान, पृष्ठ –19।
32. एस. के. डे अर्ली हिस्ट्री ऑफ दि वैष्णव फेथ एण्ड मूवमेण्ट इन बंगाल, पृष्ठ– 177।
33. टी.एम. कैनेडी – दि चैतन्य मूवमेण्ट, पृष्ठ – 164।
34. श्री नाथ पंडित – चैतन्य मत मंजूषा, पृष्ठ– 102।
35. हरिमोहन शिरोमणि – कृष्ण चैतन्य संन्दर्भ, पृष्ठ– 305।
36. कृष्णदास कविराज – चैतन्य चरितामृत, पृष्ठ – 174।
37. एस.सी. मुखर्जी – ए स्टडी ऑफ वैष्णविज्म इन ऐंशियन्ट एण्ड मिडवेल बंगाल, पृष्ठ –354।
38. कृष्णदास कविराज– चैतन्य चरितामृत, पृष्ठ– 207।
39. रसिक मोहन विद्याभूषण – रायरामानंद, प्रष्ठ– 102।
40. लोचनदास ठाकुर – जगन्नाथ नाटक पद्यानुवाद ।
41. हरिदास– गौड़िय वैष्णव जीवनी, पृष्ठ– 248 ।
42. पूर्णसिंह बैस ठाकुर – श्री गौड़ेश्वर सम्प्रदाय का इतिहास, पृष्ठ– 341।
43. कृष्णराज कविराज – स्वरूप वर्णन पृष्ठ – 94।
44. वही पृष्ठ –239 ।
45. टी.एम. कैनेडी – दि चैतन्य मूवमेण्ट , पृष्ठ– 241 ।
46. ब्रजमोहन दास –बृज दर्पण, पृष्ठ– 40 ।
47. नाभाजी – भक्तमाल पृष्ठ– 213।
48. डा0 अबध विहारी लाल कपूर– बृज के भक्त, पृष्ठ– 281।
49. एस.सी. चक्रवर्ती – फिलोसोफी ऑफ बंगाल वैष्णविज्म, पृष्ठ–124 ।
50. डा0 ऊषा गोयल – चैतन्य सम्प्रदाय : संस्कृति और साहित्य, पृष्ठ–87।
51. सार्वभौम भट्टाचार्य ने चैतन्य शतक , महाप्रभो शतनाम स्तोत्र, श्री कृष्ण चैतन्य नाम विंशति स्तोत्र, श्री नित्यानंद द्वादशक अष्टक, अद्वैताष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र, श्री अद्वैताष्टक, श्री गोरांगष्टक, शची तनमाष्टक, गौरांगाष्टोत्तर शतनाम स्तोत्र, श्री चैतन्य शतक ग्रन्थों की रचना कर चैतन्य सम्प्रदाय में भक्ति साहित्य की वृद्धि की।
52. नरसिंह दास– काशी विश्वेश्वर सम्वाद, पृष्ठ– 4।
53. वही पृष्ठ –20।
54. वृंदावन दास ठाकुर– चैतन्य भागवत, पृष्ठ– 89।
55. मुरारी गुप्त – श्री कृष्ण चैतन्य चरितामृत 'कड़चा'।
56. लोचनदास– चैतन्य मंगल, पृष्ठ– 31 ।
57. वृंदावनदास– चैतन्य भागवत, पृष्ठ– 86 ।
58. शोधार्थी ने सर्वेक्षण से ज्ञात किया ।
59. कलीहर वसु – जीवन वार्ता, पृष्ठ –42 ।
60. भोलानाथ शर्मा – बंगला साहित्य की कथा, पृष्ठ– 43 ।
61. कर्णपूर– चैतन्य चन्द्रोदय नाटक।
62. कर्णपूर – गौर गणोद्देश दीपिका।
63. कर्णपूर–आनंद वृंदावन चम्पू।
64. कर्णपूर– कृष्णाहिक कौमुदी।
65. कर्णपूर– अलंकार कौस्तुभ।